‘विकास’ और ‘वैश्वीकरण’ के मौजूदा ढांचे से गंभीर नकारात्मक परिणाम पैदा हो रहे हैं : पारिस्थितिकीय ध्वंस, समुदायों की तबाही, बड़े पैमाने पर आजीविकाओं का तहस-नहस होना और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं में इजाफा आदि। इन बदलावों का काफी अध्ययन हो चुका है, उनके बारे में काफी कुछ लिखा और कहा जा चुका है।

मगर इसके साथ ही पारिस्थितिकीय रूप से टिकाऊ और सामाजिक-आर्थिक रूप से समतापरक इंसानी खुशहाली के व्यावहारिक रास्ते ढूंढने के लिए विकल्पों की तलाश और आजमाइश की भी असंख्य कोशिशें की जा रही हैं। आमतौर पर ये छोटी-छोटी, बिखरी हुई, एक-दूसरे से अलग-थलग कोशिशें हैं और लिहाजा उनके बारे में इतना अध्ययन नहीं हुआ है कि उनका व्यापक प्रचार हो सके। इन कोशिशों को एक वैकल्पिक समाज की समग्र रूपरेखा या दृष्टियों में नहीं पिरोया गया है और फिलहाल वे प्रभुत्वशाली ढर्रे को चुनौती देने और बदलने के लिए एक ‘निर्णायक बल’ हासिल करने के मुकाम तक नहीं पहुंची हैं।

यह इन्हीं विकल्पों की एक प्रदर्शनी है जो हमारी जमीनों, नदियों, जंगलों, पहाड़ों, खेती और उनको सींचने-संवारने वाले लोगों की विपुल विविधता और समृद्धि को दर्शाने की उम्मीद से आयोजित की गई है। यह ऐसे प्रयासों और विचारों की पूरी शृंखला नहीं है बल्कि उसके केवल कुछ उदाहरण हैं। जैसे-जैसे यह प्रदर्शनी आगे फैलेगी, नए स्थानों तक पहुंचेगी, इसमें नए प्रयोग और मुद्दे भी आपको देखने को मिलेंगे। इस प्रदर्शनी में फिलहाल कुछ ही ला. ेगों द्वारा ली गई तस्वीरें शामिल की गई हैं मगर हमें पूरी उम्मीद है कि ये ऐसे लोगों को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए निश्चय ही काफी हैं जो इस तरह के प्रयोगों में शामिल हैं। हमें यकीन है कि आने वाले वक्त में वे लोग खुद भी अपनी रचनाशीलता का योगदान देने से पीछे नहीं हटेंगे, वे भी नई-नई तस्वीरें, चित्र, ऑडियो या विडियो इस प्रदर्शनी में जोड़ते रहेंगे। इस प्रकार, समय के साथ एक ऐसा चित्ताकर्षक संसाधन अस्तित्व में आ पाएगा जो एक वैकल्पिक भविष्य की कल्पना को सटीक ढंग से व्यक्त कर सके।

फोटोग्राफ और सुझाव इन्हें भेजें : chikikothari@gmail.com

योगदान : अशीष कोठारी, एडम कायका, इनांक तेकगुच, पंकज सेखसरिया, शीबा देसोर, सौरभ फड़के, विनय नायर, सुजाता पद्मनाभन, विवेक ब्रूम, डीडीएस कम्युनिटी मीडिया ट्रस्ट

संचालन : विनय नायर

प्रकाशक : कल्पवृक्ष, २०१५

हिंदी अनुवाद : योगेंद्र दत्त